IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैश्विक नागरिकता एवं सहिष्णुता की संकल्पना में भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता रू राष्ट्रीय शिक्षा नीतिए 2020 के विशेष संदर्भ में

डॉ0 सुबोध प्रसाद रजक

पीएचण्डीण ;बीण्एचण्यूण्ए वाराणसीद्ध

सहायक प्राध्यापकए

राजनीति विज्ञान विभागए

गोड्डा कॉलेजए गोड्डा

झारखण्ड.814133

"The world is my country, all mankind are by brethren and to do good is my religion." – Thomas Paine (Common Sense, Page-47)

भूमिका रू

शिक्षा न सिर्फ स्वयं को बल्कि समस्त समाज को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करने का माध्यम होती है। शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने काए व्यक्ति के अन्दर विद्यमान अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास करने काए एक समावेशीए सहिष्णुए न्यायसंगत एवं मानव गरिमा को प्रतिष्ठित करने का साधन है। भारत के संदर्भ में यदि बात की जाय तो शिक्षा के माध्यम से ही हम अखण्डए अद्भुतए अद्वितीयए अतुल्यए समावेशी व सहिष्णु भारत निर्माण की तरफ बढ़ते हुए समस्त विश्व समाज को शांतिए सहिष्णु व वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दे सकते हैंए एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को साकार कर सकते हैं। समस्त विश्व के संदर्भ में यदि बात की जाय तो शिक्षा के माध्यम से ही विश्व शांतिए सहिष्णुताए मानवता व वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को साकार कर सकते हैं। शिक्षा बराबरी सुनिश्चित करने का एक बड़ा माध्यम है।

पश्चिमी विद्वानों के दृष्टिकोणों में शिक्षा का अर्थ एवं महत्व रू

प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक श्द रिपब्लिकश में शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि श्शसच्ची शिक्षाए वह जो कुछ भी होए उसे मनुष्यों को उनके परस्पर सम्बन्धों में और उनकी सुरक्षा में उनके प्रति सभ्य बनाने और मानवीकरण की सर्वाधिक प्रवृत्ति हो।श्श

मध्यकाल के प्रसिद्ध शिक्षा.शास्त्री कामेनियस ने शिक्षा को एक प्रणाली के रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि श्शशिक्षा व्यक्ति में धर्मए ज्ञान और नैतिकता से संबंधित गुणों का विकास करती है और इस प्रकार मानव प्राणी कहलाने का अपना अधिकार स्थापित करता है।श्श

हरबर्ट ने लिखा है . श्शनैतिकता में ही शिक्षा का समस्त तत्व निहित है।श्श

प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का मानना है कि श्शशिक्षा तथ्यों को याद करना नहीं है बल्कि मस्तिष्क को सोचने के लिए प्रशिक्षण देना है।श्श

पाओलो फ्रेरे के अनुसार . श्शशिक्षा का मतलब अक्षरों का निष्प्राण साक्षात्कार भर नहीं है बल्कि सभ्यता एवं संस्कृति की अनवरत समीक्षा है।श्श

अमेरिकी शिक्षाविद् जॉन डिवी ने अपनी पुस्तक **श्क्मउवबतंबल ंदक म्कनबंजपवद रू ।द प्दजतवकनबजपवद जव जीम चीपसवेवचील वि म्कनबंजपवद ;1916द्धश** में निम्न शब्दों में शिक्षा को परिभाषित किया है .

श्म्कनबंजपवद पे जीम चतवबमेे वि जीम तमबवदेजतनबजपवद वि मगचमतपमदबमे हपअपदह पज ं उवतम `वबपंसप्रमक अंसनम जीतवनही जीम उमकपनउ वि पदबतमेंमक पदकपअपकनंस मििपबपमदबलण्श

भारत रत्न नेल्सन मंडेला का मानना है कि **श**शिक्षा वह साधन है जिससे न सिर्फ स्वयं को बल्कि समस्त संसार को बदला जा सकता है।**श**

उपर्युक्त विद्वानों के शिक्षा संबंधी विचारों को जानने के पश्चात् हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि क्यों शिक्षा प्रणाली में निरंतर सुधार की आवश्यकता होती है**घ** इसका मूल कारण है शिक्षा का अपने मौलिक अर्थ से भटकाव एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कतिपय दोषों का आना है और इस तथ्य को प्रमाणित विद्वानों के विचार स्वयं करते हैं।

ऑस्ट्रियन शिक्षाशास्त्री इवान इलिच ;जिन्होंने डी स्कूलिंग सोसायटी की स्थापना की**द्ध** का मानना है कि **श**जिसे हम आजकल शिक्षा कहते हैं वह उपभोक्तावाद है**ए** जिसका उत्पादन स्कूल नाम की संस्था द्वारा होता है। जितनी अधिक शिक्षा कोई व्यक्ति उपभोग करता है**ए** उतना ही वह अपने भविष्य को सुरक्षित बनाता है। साथ ही साथ ज्ञान के पूँजीवाद में उसका दर्जा ज्यादा ऊँचा उठता है। इस तरह शिक्षा समाज के पिरामिड में एक नया वर्ग बनाती है और जो शिक्षा का उपभोग करते हैं**ए** वे यह दलील पेश करते हैं कि उन्हीं से समाज को ज्यादा फायदा है।**श**

भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट का मानना है कि **श**एक व्यक्ति के मस्तिष्क को शिक्षित कर देना किन्तु उसके अंदर नैतिक शिक्षा का समावेश न करना समाज के लिए एक संकट को आमंत्रण देना है।**श**

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का अभाव दिखता है। किसी शिक्षित एवं अच्छे अकादमिक डिग्री वाले व्यक्ति का आतंकवाद एवं अन्य असामाजिक कार्यों में संलग्न होना इस तथ्य को प्रमाणित करता है।

प्रसिद्ध विद्वान जॉर्ज बर्नाड शॉ के अनुसार . **श**बुद्धिमान जानते है कि हम अपने भविष्य को तो नहीं बदल सकते पर अपनी आदतों को बदल ही सकते हैं और यकीन करें**ए** आदतें ही भविष्य का निर्माण करती हैं।**श** बुद्धिमान बनाने एवं अच्छी आदतों के निर्माण में शिक्षा प्रणाली की महती भूमिका होती है और भविष्य का विश्व शाांतिपूर्ण एवं सहिष्णु न होने की आशंका वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर सवाल खड़ा करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का अर्थ एवं महत्व रू

ऋग्वेद के अनुसार . **श**शिक्षा वह है जो व्यक्ति को सम्पूर्ण अर्थों में आत्मनिर्भर बनाये **;म्कनबंजपवद पे `वउमजीपदह )पबी उंमे ं उंद `मसा.तमसपंदजण्द्धश**

उपनिषदों के ऋषि याज्ञवल्क्य के अनुसार . **श**शिक्षा वह है जो मनुष्य को सच्चरित्र और संसार के लिए उपयोगी बनाये।**श**

आदिगुरु शंकराचार्य ने कहा है . **श**सा विद्या या विमुक्तये**श** अर्थात् विद्या वही है जो मुक्त करे।

बौद्ध चिंतन का मूल तत्व है . **श**आत्मदीपो भव**श** अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो और यह कार्य शिक्षा से ही संभव है।

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि **श**शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।**श** अर्थात् शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने स्वः के साथ साक्षात्कार करता है और उसका सम्पूर्ण सार्थक विकास कर पाता है।

महर्षि अरविंद ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **श**एसेज ऑन गीता**श** में शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि **श**बालक की शिक्षा उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम**ए** सर्वाधिक शक्तिशाली**ए** सर्वाधिक अंतरंग और जीवंत है**ए** उसको व्यक्त करना होना चाहिए। मनुष्य की क्रिया और विकास जिस साँचे में ढलने चाहिए**ए** वह उसके अंतरंग गुण और शक्ति का साँचा है। उसे नई वस्तुएँ

अवश्य प्राप्त होनी चाहिएए परंतु वह उनको सर्वोत्तम रूप से और सबसे अधिक प्राणमय रूप में स्वयं अपने विकासए प्रकार और अंतरंग शक्ति के आधार पर प्राप्त करेगा।श्श

महर्षि अरविंद बालक के बौद्धिक विकास के साथ.साथ उसका नैतिक विकास भी कराना चाहते थे। उनका मानना था कि बौद्धिक शिक्षा जो नैतिक व भावनात्मक प्रगति से रहित होए मानव के लिए हानिकारक है।

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार . श्शशिक्षा वह सामाजिक प्रक्रिया हैए जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और अध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति करता है। उनका मानना था कि शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिकए बौद्धिकए नैतिक व सामाजिक विकास का माध्यम होना चाहिए।श्श वे कहते थे कि श्शउच्चतम शिक्षा वह है जो हमारे जीवन में सभी अस्तित्वों के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाती है। ;जीम ीपहीमेज मकनबंजपवद पे जींज ूीपबी उंामे पद वनत सपमि ींतउवदल ूपजी सस मगपेजमदबमण्द्ध

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के शब्दों में . श्शशिक्षा से मेरा अभिप्राय मनुष्य के शरीरए मन और आत्मा के उच्चतम विकास से है।श्श शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को अच्छेए बुरे का ज्ञान प्रदान करे। उसे नैतिक बनाने के लिए प्रेरित करे।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा के अर्थ व उद्देश्य को समझने के पश्चात् हम वर्तमान शिक्षा प्रणणली के संदर्भ में भारतीय मनीषियों के विचारों को जानने का प्रयास करेंगे।

शिक्षा के प्रचार.प्रसार में विश्वविद्यालयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए इस संदर्भ में पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचार जानने होंगे। पंडित नेहरू के शब्दों में . श्शविश्वविद्यालय मानवता के लिएए सहिष्णुता के लिएए विवेक के लिएए प्रगति के लिएए विचारों को आगे बढ़ाने के लिए और सत्य की खोज के लिए है। यह मानव जाति को ऊँचे लक्ष्यों की ओर ले जाने के लिए है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली विश्वविद्यालय के इस अर्थ से कोसों दूर चली गई है।श्श

महात्मा गाँधी का मानना था कि श्शवास्तविक समस्या तो यह है कि लोग जानते ही नहीं हैं कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या हैध हम शिक्षा का मूल्यांकन उसी रूप में करते हैंए जैसे भूमि या फिर शेयर का करते हैं। हम पूरी शिक्षा प्रणाली को इस रूप में देखते हैं कि यह आर्थिक उपार्जन का एक माध्यम हो। अगर यही हमारी सोच बनी रही तो हम शिक्षा का अर्थ कभी नहीं समझ पायेंगे।श्श आज की शिक्षा प्रणाली रोजगार केन्द्रित होकर एक आर्थिक मानव का निर्माण कर रही है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए नाकाफी है।

प्रसिद्ध साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त ने 1920 में भारत की शिक्षा प्रणाली पर बाजार के प्रभाव के संदर्भ में जो बात कही थीए वह आज भी प्रासंगिक है .

ष्हा! आज शिक्षा मार्ग भी संकीर्ण होकर क्लिष्ट हैए
कुलपति सहित उन गुरुकुलों का ध्यान ही अवशिष्ट है।
बिकने लगी विद्या यहाँ अबए शक्ति हो तो क्रय करोए
यदि शुल्क आदि न दे सको तो मूर्ख रहकर ही मरो।श्श

महर्षि अरविंद के अनुसार भारत की कमजोरी का प्रमुख कारण ;लंबे समय तकद्ध उसकी दासता नहीं हैए न गरीबी और न आध्यात्मिकता अथवा धर्म की हीनता हैए बल्कि वह है विचार.शक्ति का ह्रासए ज्ञान की मातृभूमि में अज्ञान का विस्तार। सर्वत्र में विचार करने की अयोग्यता अथवा अनिच्छा। इस हीनता का मूल कारण है ज्ञान के स्वराजए विचारों के स्वराज का अभाव।

उपर्युक्त विद्वानों के शिक्षा संबंधी विचारों का परिचय प्राप्त करने के पश्चात् हम उन दो आधुनिक भारतीय चिन्तकोंए राष्ट्र निर्माताओंए जिन्होंने भारत को महज एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं समझा बल्कि भारत को एक चिंतनए दर्शनए आदर्शए मानव कल्याणकारी ज्ञान परंपराए विश्व की सांस्कृतिक चेतनाए आध्यात्मिक मूल्यों की पाठशालाए मानवीय व नैतिक मूल्यों को स्थापित

करने वाला जीवन.प्रणाली समझते हुए एक लघु विश्व समझा और पूरे विश्व में भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा को प्रतिष्ठित करते हुए विश्व कल्याणकारीए मानवतावादीए शांति व सहिष्णुता को समृद्ध करने वाली समावेशी शिक्षा प्रणाली की वकालत की।

मेरा मानना है कि व्यक्तित्व की शुद्धताए विचारों की शुद्धता का प्रमाण.पत्र है। अब हम ऐसे व्यक्तित्व की चर्चा करना चाहेंगे जिन्हें गाँधीजी सबसे बड़ा देशभक्त मानते थेए जिनके चिंतन में धर्मए विज्ञान एवं अध्यात्म का मधुर संगम था। जिसे मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने विश्व प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उस महान आत्मा का नाम है महामना पंडित मदनमोहन मालवीय। उनके भारत निर्माण की संकल्पना के केन्द्र में शिक्षा थी। उनका मानना था कि किसी भी देश के सामाजिकए आर्थिक व सांस्कृतिक प्रगति का मूल आधार शिक्षा ही है।

उन्होंने शिक्षा को उत्पादन के विभिन्न केन्द्रोंए कृषिए उद्योगए विज्ञानए वाणिज्य के साथ.साथ धर्म विज्ञान को भी जोड़ा। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्वरोजगारए ज्ञान का स्वराज एवं विचारों का स्वराज के लिए भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनायी जायए जिसमें अतीत का गौरवए वर्तमान की आवश्यकता एवं भविष्य के समावेशी एवं स्वर्णिम बनने की संभावना विद्यमान हो। 1902 में कांग्रेस की बैठक में उन्होंने कहा था कि श्अब वह समय बीत चुका है जब हम ये समझें कि अंग्रेज हमें शिक्षा उपलब्ध करायेंगे। यह हमारा दायित्व है कि हम इसकी महत्ता को समझें। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि कोई भी सरकार तब तक स्थायी नहीं हो सकती है जब तक कि वह जनता को शिक्षा उपलब्ध न कराये। महामना ने अनेक कुरीतियों तथा सामाजिकए धार्मिक वैमनस्य का कारण अशिक्षा को माना।

एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करने की बात कही है। उनका मानना था कि श्हम भारतीय चिंतन परंपरा का ऐसा विकास करें कि वह अधुनातन विश्व विचार परंपरा का एक सार्थक हिस्सा बन जाए।श्श वे शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे। उनका मानना था लोगों का सही सोच समाज का मन है। इस मन की सृजन क्षमता महत्त्वपूर्ण है। हमें नए सृजनात्मक विचारों की जरूरत हैए जो भारतीयता के विचार में निहित है। भारत में शांतिए विकास एवं पर्यावरण एक.दूसरे के पूरक रहे हैंए हमारे वैदिक लोगों ने ऐसे आह्वान किये हैं। पंडितजी ने इस चीज को श्चिति शक्तिश की संज्ञा दी है। उत्थानए प्रगति और धर्म का मार्ग चिति है। चिति सृजन हैए चिति ही किसी राष्ट्र की आत्मा है। चिति विहीन राष्ट्र की कल्पना व्यर्थ है। वही एक शक्ति है जो श्रद्धा और संस्कृति का मार्ग प्रशस्त करती है। उनका मानना था कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संदर्भ में ही मानवतावाद को परिभाषित किया जाना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने श्सिद्धांत एवं नीतिश प्रलेख में स्वयं बताते हैं कि मानवतावाद के नाम से कई विचारधाराएँ प्रचलित रहीं हैंए किन्तु उनके विचार भारतीय संस्कृति के चिंतन से अनुप्राणित न होने के कारण मूलतः भौतिकवादी है। मानव के नैतिक स्वरूप अथवा व्यवहार के लिए वे कोई तात्विक विवेचन प्रस्तुत नहीं कर पातीं। आध्यात्मिकता को अमान्य कर मानव तथा मानव जगत के संबंधों और व्यवहार की संगति नहीं बिठायी जा सकती है।

वैश्विक नागरिकता की संकल्पना की आवश्यकतारू

संकीर्ण राष्ट्रवाद ने लंबे समय तक मानव जाति का संहार किया है। भौगोलिक सीमांकनए सामाजिकए राजनीतिकए सांस्कृतिक विभेदए अंध राष्ट्रभक्ति व राष्ट्रवाद ने मानो मानव अस्तित्व व अस्मिता के लिए निरंतर खतरा उत्पन्न करने का काम किया है। जातीय गौरव की संकीर्ण मानसिकता ने मानव सभ्यता को निरंतर संभावित विश्वयुद्ध होने की संभावना को बढ़ाया है। ताजा घटनाक्रम स्वतः इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। तब फिर सवाल उठता है कि इन संभावित खतरों का समाधान क्या होद्द समस्त विश्व में शांतिए सहिष्णुताए भाईचारा स्थापित करते हुए मानव सभ्यता को कैसे इसके स्वर्णिम काल में पहुँचाया जायद्द मानव को कैसे सिर्फ और सिर्फ मानव के रूप में पहचाना जायद्द मानव गरिमा और मानव अधिकार को किस प्रकार पूरी स्वीकार्यता के साथ सार्वभौमिक शब्दावली में परिभाषित किया जायद्द जब हम इन सवालों की पड़ताल करते हैं तो यह पाते हैं कि इन तमाम सवालों का उत्तर वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को साकार करने में मिलता है।

वैश्विक नागरिकता का अर्थ एवं विशेषताएँ रू

वैश्विक नागरिकता को विधिक शब्दावली में परिभाषित नहीं किया जा सकता है। वैश्विक नागरिकता को हम एक नैतिक मूल्यए मानवीय दायित्वए विश्व.बंधुत्व की मानसिकता एवं विश्व.समाज के एक सदस्य के साथ.साथ सहिष्णुताए शांतिए समावेशीपनए बहुसंस्कृतिवाद व सर्वधर्म समभाव के विश्वासों के रूप में समझ सकते हैं।

वर्तमान में वैश्विक नागरिकता को कई आयामों के संदर्भ में समझा जा सकता हैए लेकिन ये आयाम वैश्विक नागरिकता के संपूर्ण संकल्पना को प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। पहलाए वैश्विक समाज के सुधारकों एवं शुभचिंतकोंए जिनमें हम दार्शनिकों एवं बुद्धिजीवियों को रख सकते हैंय ये अपने चिंतन व विचार शक्ति के साथ.साथ अपने दायित्व बोध के कारण वैश्विक नागरिकता की परिधि में आते हैं। दूसराए विशिष्ट वैश्विक व्यापारी वर्गए जिनके व्यापार का दायरा पूरा विश्व है और वे विश्व के किसी कोने में घटित किसी भी घटना से प्रभावित होते हैं। वैश्वीकरण के दौर में इस वर्ग का दायरा निरंतर बढ़ता जा रहा है।

वैश्विक पर्यावरण आन्दोलन से जुड़े पर्यावरणविद व समाजसेवी वर्ग को भी वैश्विक नागरिकता का एक आयाम समझा जा सकता है।

राजनीतिक चेतनाए लोकतंत्र का एक राजनीति प्रणाली एवं जीवन.दर्शन के रूप में प्रचार.प्रसार भी वैश्विक नागरिकता के राजनीतिक आयाम का प्रतिनिधित्व करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिकए आर्थिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापों में परस्पर सहयोग एवं सहभागिता भी वैश्विक नागरिकता की दिशा में बढ़ता एक बड़ा कदम है।

न्छप्ब्थ ने निम्न शब्दों में वैश्विक नागरिकता ;ळसवइंस ब्पजप्रमदीपचद्ध को परिभाषित किया है.

ष्ळसवइंस बपजप्रमदीपच ं चमतेवदे ूीव नदकमतेजंदक पदजमत.बवददमबजमकदमेए अंसनमे ंदक तमेचमबजे कपअमतेपजल जांमे ंबजपवद पद उमंदपदहनिस ूले ंदक ीं जीम ंइपसपजल जव बींससमदहम पदरनेजपबम हसवइंस बपजप्रमदे ंबज ूपजीवनज सपउपजे वत हमवहतंचीपबंस कपेजपदबजपवदे ंदक जीमल कव ेव वनजेपकम जीम जतंकपजपवदंस ेचीमतमे वचिवूमत जीमपत हवंस पे जव कममिदक ीनउंद कपहदपजल ंदक जव चतवउवजम ेवबपंस ंबववनदजंइपसपजल ंदक पदजमतदंजपवदंस ेवसपकंतपजल पद ूीपबी जवसमतंदबम पदबसनेपवद ंदक तमबवहदपजपवद वि कपअमतेपजल वबबनचल चतपकम वि चसंबम पद ंवतसक ंदक कममकए तमसिमबजपदह जीम उनसजपचसपबपजल वि बजवते पदअवसअमक पद जीम ंबजपवदे वि हसवइंस बपजप्रमदीपचण । हसवइंस बपजप्रमद जतंदेबमदके चवसपजपबंस इवतकमते ंदक ेनउमे जींज जीम तपहीजे ंदक तमेचवदेपइपसपजपमे बंद इम कमतपअमक तिवउ इमपदह ं बपजप्रमद वि जीम ूवतसकण्ण्

वैश्विक नागरिकता की विशेषताएँ रू

1ण् वैश्विक नागरिकता व्यक्ति को वैश्विक मानव समुदाय में एक जिम्मेदार एवं कर्तव्यपरायण इकाई के रूप में परिभाषित करता है।

2ण् वैश्विक नारिकता व्यक्ति को एक वैश्विक नागरिक मानते हुए मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणाए 1948 के आलोक में नागरिक अधिकारों को परिभाषित करती है।

3ण् वैश्विक नागरिकता व्यक्ति को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी समझ विकसित करने के लिए प्रेरित करती है।

4ण् वैश्विक नागरिकता विश्व में विद्यमान सांस्कृतिक व भौगोलिक विविधता के प्रति सम्मान एवं आदर प्रकट करने की बात करती है।

5ण् वैश्विक नागरिकता विश्व के समस्त नागरिकों के साथ परस्पर सामाजिकए सांस्कृतिक संबंध विकसित करने की बात करती हैए जिसमें सोशल मीडिया के विभिन्न साधन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

6ण ये उन साधनों एवं उपायों की खोज एवं समझ विकसित करने की बात करती है**ए** जिससे व्यक्ति का विश्व समाज के साथ अन्तर्क्रिया एवं अन्तर्निर्भरशीलता बढ़े।

7ण ये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य राष्ट्रों के साथ बेहतर एवं वृहत् आपसी सहयोग की बात करती है।

8ण ये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमयों**ए** संधियों एवं समझौतों को जो वैश्विक मुद्दों से संबंधित हो**ए** प्रभावी रूप से पालन एवं क्रियान्वयन की बात करती है।

9ण ये व्यक्ति में एक वैश्विक नागरिक होने के नाते वैश्विक समता**ए** वैश्विक न्याय**ए** वैश्विक लोकतंत्र**ए** वैश्विक स्वतंत्रता**ए** बंधुता एवं मानव गरिमा जैसे मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए प्रेरित करता है।

न्छप्ब्थ पूरे विश्व में वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को अध्ययन**ए** अध्यापन एवं अनुपालन के स्तर पर शिक्षा के माध्यम से सिद्धांत व व्यवहार में वास्तविक धरातल पर उतारने का प्रयास करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति**ए 2020** में बड़े गंभीर शोध के परिणामस्वरूप वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को एक अध्ययन पत्र के रूप में शामिल किया गया है।

अतीत एवं वर्तमान का यथार्थ यही बताता है कि वैश्विक नागरिकता की संकल्पना साकार होने से ही हम स्वर्णिम भविष्य**ए** अहिंसक**ए** शांतिपूर्ण**ए** सौहार्द्रपूर्ण**ए** सहिष्णु व बंधुतापूर्ण विश्व समाज का निर्माण कर सकेंगे। इसलिए वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों को शिक्षा के माध्यम से वैश्विक नागरिकता के मूल्यों**ए** विश्वासों**ए** दायित्वों को अपने जीवन दर्शन में आत्मसात करने के लिए प्रेरित करना होगा। उन्हें इस संकल्पना की सैद्धान्तिक समझ एवं व्यावहारिक अमलीकरण की महत्ता के प्रति जागरूक होना होगा। वर्तमान व भविष्य का विद्यार्थी व शोधार्थी ही विश्व समाज का निर्माणकर्ता है और शिक्षा इस विश्व समाज के निर्माण का माध्यम है।

फ्रेडरिक डगलस ने बताया है . **श**टूटे हुए पुरुषों की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों को बड़ा करना आसान है।**श** मेरा मानना है कि मजबूत बच्चों के निर्माण का एक बड़ा साधन शिक्षा है। अतः शिक्षा व्यवस्था के हरेक स्तर पर वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को शामिल किया जाय और राष्ट्रीय शिक्षा नीति**ए 2020** में इस विषय पर खासा ध्यान रखा गया है।

वैश्विक नागरिकता की संकल्पना और भारत का संविधान रू

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारतीय ज्ञान**ए** चिंतन**ए** दर्शन**ए** भारत का विश्व समाज के प्रति दृष्टि**ए** मानवता को स्थापित करने वाले मूल्यों**ए** विश्वासों को सारगर्भित रूप में एक दर्शन के रूप में भारतीय संविधान की प्रस्तावना में एवं विस्तृत सैद्धांतिकी के रूप में भारत के संविधान में लिपिबद्ध किया गया है।

अतः यह अवश्यक है कि हम थोड़ी सी चर्चा भारतीय संविधान के संदर्भ में वैश्विक नागरिकता की करें। भारतीय संविधान की आत्मा**ए** उद्देश्य**ए** दर्शन एवं परिचय को प्रतिबिंबित करता प्रस्तावना**ए** जिसे प्रसिद्ध न्यायविद् व संविधान विशेषज्ञ एन**ण**ए**ण** पालकीवाला ने संविधान का **श**परिचय पत्र**श** कहा है**ए** जिसके प्रत्येक शब्दों में भारत का विश्वास**ए** मूल्य**ए** दृष्टि व दर्शन अन्तर्निहित है। प्रस्तावना में उल्लेखित पंथ निरपेक्ष**ए** लोकतंत्रात्मक गणराज्य**ए** सामाजिक**ए** आर्थिक**ए** राजनीतिक न्याय**ए** विचार**ए** अभिव्यक्ति**ए** विश्वास**ए** धर्म की स्वतंत्रता**ए** प्रतिष्ठा और अवसर की समता एवं व्यक्ति की गरिमा जैसे शब्द मानव गरिमा**ए** मानवाधिकारों को प्रतिष्ठित करते हुए वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को एक मूल्य व विश्वास के रूप में स्थापित करती है।

संविधान सभा के सलाहकार वी**ण**एन**ण** राव ने नीति निर्देशक तत्वों को राज्य प्राधिकारियों के लिए शैक्षिक महत्व का बताया है। संविधान का अनुच्छेद.**51** में उल्लेखित है . **श**अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा की अभिवृद्धि**ए** राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत व सम्मानपूर्ण संबंधों तथा अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता से निपटाने के लिए प्रोत्साहन देन का प्रयास करना।**श** ये बातें वैश्विक नागरिकता की संकल्पना को सासकार करने के लिए न सिर्फ भारत को बल्कि सम्पूर्ण विश्व को एक नैतिक दर्शन व नीतिपरक मूल्य प्रदान करता है।

सरदार स्वर्ण सिंह के नेतृत्व में गठित समिति के सुझाव पर **42**वें संविधान सशोधन **;1976द्ध** द्वारा अनुच्छेद.**51**क के माध्यम से मूल कर्तव्यों की सूची जोड़ी गई है। इस सूची के एक कर्तव्य में उल्लेख किया गया है कि नागरिकों का यह कर्तव्य है

कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोणए मानवतावादए ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें। यह बातें भी वैश्विक नागरिकता की भावना को पुष्ट करती है।

निष्कर्ष रू

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैश्विक नागरिकता की संकल्पना की सैद्धांतिकी के विकास एवं अमलीकरण में भारतीय ज्ञान की समृद्ध परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान है। हमें भारत के इस समृद्ध ज्ञान परंपरा के नैतिक आदर्शोंए मानवीय मूल्योंए प्रकृतिवादए सत्यए अहिंसाए प्रेमए शांतिए सहिष्णुताए समावेशीपनए मानव गरिमाए वसुधैव कुटुम्बकम आदि विश्वासों को समस्त विश्व समाज में प्रचारित एवं प्रसारित करना होगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक **श्क्पेबवअमतल वि प्दकपं** में भारत को ष्एक लघु विश्व . कहा है। अतः भारत का समग्र रूप मेंए संपूर्ण अर्थों में बहुमुखी विकास मूलतः विश्व समाज के विकास का कारण होगा। प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक किशन पटनायक के शब्दों में . श्आखिर बुद्धि या ज्ञान किसलिएध इसलिए कि मनुष्य समुदाय जिन समस्याओं और संकटों से रूबरू होता हैए उनको समझने के लिए दिशा.दर्शन मिल सके एवं उन समस्याओं का समुचित समाधान किया जा सके। मनुष्य के विकास और समाज की प्रगति पर सोच.विचार करते समय यह मानकर चलना पड़ता है कि मनुष्यों में आपसी सद्भाव बढ़ना चाहिएए एक आदमी दूसरे को मित्र और सहयोगी के रूप में देखे। सारे सोच विचार का यही प्रस्थान बिन्दु है। नैतिकता का भी यही आरम्भ बिन्दु है। समाज के जिस बदलाव को हम समर्थन दे रहे हैंए जिन नीतियों को हम बढ़ावा दे रहे हैंए उनकी अंतिम कसौटी यह होती है . क्या नैतिकता बढ़ेगीए मानवता विभूषित होगीए मानव मानवीय मूल्यों से अलंकृत होगाए विषमताएँ घटेंगीए सद्भावए सहिष्णुताए संयम बढ़ेगी।श्

"We have great faith in humanity like the sun, it can be clouded but never extinguished…… . We are waiting for the time when the spirit of age will be incarnated in a complete human truth and the meeting of men will be translated into the unity of man." – Ravindranath Tagore.

संदर्भ :

1 किशन पटनायकण विकल्पहीन नहीं है दुनिया रू सभ्यताए समाज और बुद्धिजीवी की स्थिति पर कुछ विचारए राजकमल प्रकाशनए नई दिल्लीए 2015ण
2 निबंध.दृष्टिए दृष्टि पब्लिकेशंसए डॉण मुखर्जी नगरए दिल्ली.110009ण
3 राष्ट्रीय शिक्षा नीतिए 2020ए मानव संसाधन विकास मंत्रालयए भारत सरकार।
4 भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्थाए दृष्टि पब्लिकेशंसए डॉण मुखर्जी नगरए दिल्ली.110009ण
5 ळनींए त्ंउबींदकतंए डंामते वि डवकमतद प्दकपंए च्मदहनपद ठववो प्दकपंए 2010ण
6 पाण्डेयए डॉण बालमुकुन्द एवं शर्माण डॉण देवेन्द्र कुमारए भारत रत्न महामनाए वाणी प्रकाशनए नई दिल्ली.110002ण
7 What Does it Mean to be a Global Citizen?" www.kusmosjournal.org, April, 2014.
8 Shaw, Martin (2020), Global Society and International Relations: Sociological and political perspectives, Cambridge, Polity Press.
9 Reysen, Stephen, Kafzarska-Miller Ira (2013), International Worlds and global Citizenship Journal of Global Citizenship and activity Education.
10 Sassen, Saskia (2003), Towards Post-national and Denationalized Citizenship, New York, SAGE.
11 My Country is the word by Gorry Davis.
12 The Universal Declaration of Human Rights, United Nations, 10 December, 1948.

13 Anand, Mulkh Raj. “Tagore’s Religion of Man.” Rabindranath Tagore and the Challenges of Today, edited by Bhudeb Chaudhuri and K.G. Subramanyan, Indian Institute of Advanced Learning, 1988.
14 Google
15 Newspaper.